व्रतोत्सव–पत्रिका

2026-27

श्री श्री कात्यायनी पीठ, वृन्दावन

卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी

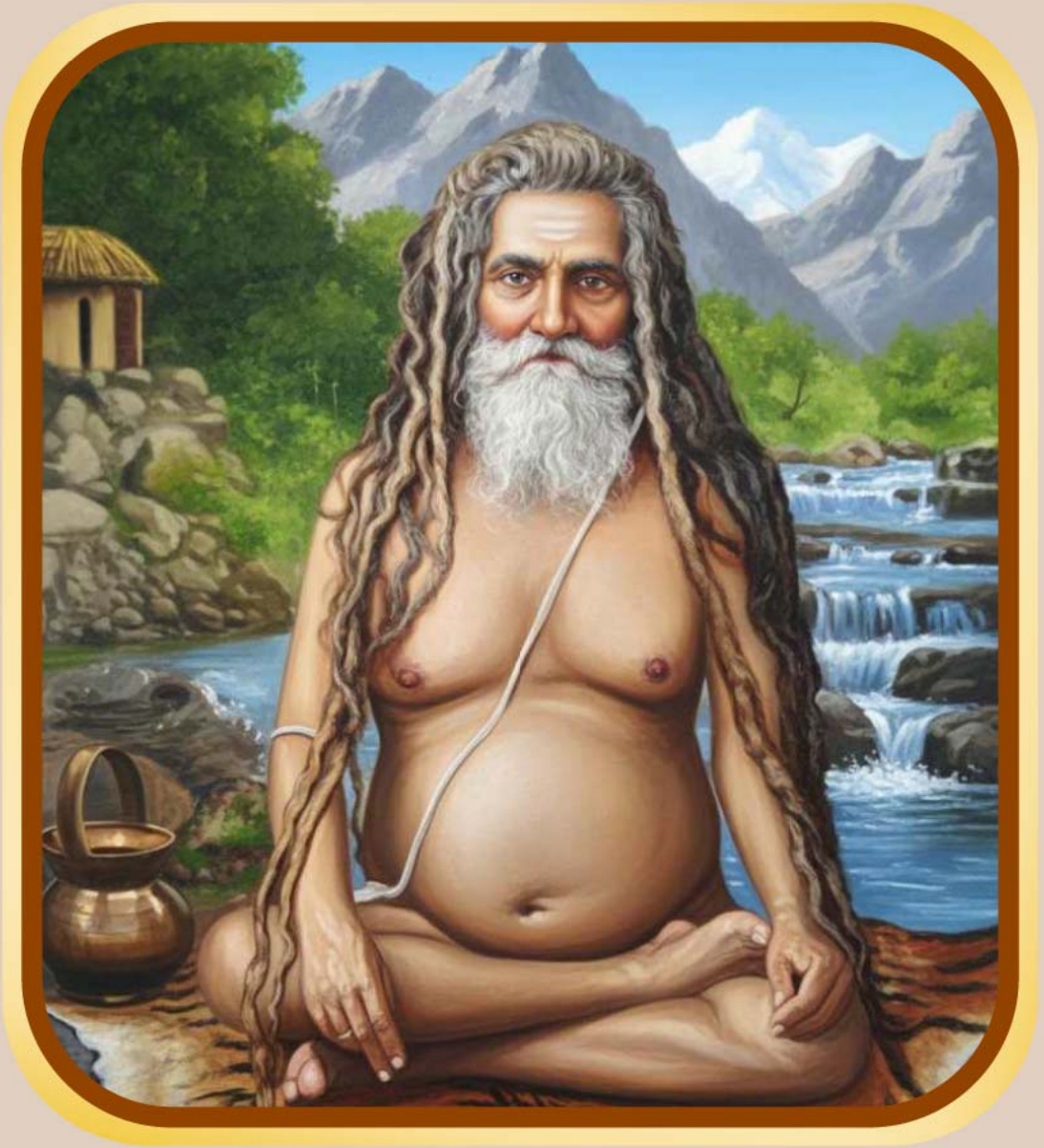

卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी

卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी

श्री श्री कात्यायनी पीठ, वृन्दावन

श्री श्री कात्यायनी पीठ वृन्दावन, भगवती सती के 51 शक्ति पीठों में मुख्य पीठ जहाँ सती जी के केश गिरे थे

卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी 卐 जय जय माँ कात्यायनी

व्रतोत्सव-पत्रिका

राजा—गुरु

मन्त्री—मंगल

सन्-२०२६-२०२७
वि.स.-२०८३ श्री रौद्र नाम संवत्सर
शकाब्द-१९४८ बंगाब्द-१४३३

श्री श्री कात्यायनी पीठ

केशवाश्रम-राधाबाग, वृन्दावन - २८११२१

Mob.: 8920984445

Website : www.katyayanipeeth.org.in

E-mail: katyayanipeethvrindavan@gmail.com

"श्री कृष्ण की क्रीड़ाभूमि में माँ कात्यायनी पीठ"

वृन्दावन

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

भारतीय संस्कृति जहाँ जो कुछ उत्तम एवं शुभ है उसका संग्रह करने वाली है। 'सर्वेषाम् विरोधेन ब्रह्मकर्म समार-भे' को वाणी प्रदान करने वाली है। संकुचित भावना से दूर त्याग, संयम, वैराग्य, सेवा, प्रेम, ज्ञान आदि से सुरभित वातावरण में पली भारतीय संस्कृति समस्त संस्कृतियों का श्रृंगार है। भारत की सांस्कृतिक चेतना मानवता के मन्दिर की अखण्ड ज्योति सी निरन्तर प्रज्वलित रही। जब भी यह ज्योति मन्द पड़ी, एक नवीन ज्योति ने अपना शुभ स्नेह दान कर उसमें प्राण फूंके। कितने वात्याचक आये और चले गये, किन्तु विश्व को शान्ति एवं सद्भाव का सन्देश देती हुई वह मंगल ज्योति निरन्तर जलती आ रही है। इसी श्रृंखला के अन्तर्गत भगवती कात्यायनी द्वारा नियुक्त महान् योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी जी महाराज के परम सुयोग्य शिष्य योगीजी 1008 श्रीयुत् स्वामी केशवानन्द ब्रह्मचारी जी महाराज ने अपनी कठोर साधना द्वारा भगवती के प्रत्यक्ष आदेशानुसार इस लुप्त स्थान श्री कात्यायनी पीठ राधाबाग, वृन्दावन नामक पावनतम पवित्र स्थान का उद्धार किया।

अनन्तकाल से भारतवर्ष यथार्थ में पवित्र स्थानों, तीर्थों, सिद्धपीठों, मन्दिरों एवं देवालयों से सुसज्जित एवं सुशोभित रहा है। जिस पावन पवित्र भूमि में गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियाँ एवं राम-कृष्ण आदि आराध्य देवों ने अवतार ग्रहण किया और अधर्म का नाश कर धर्म की रक्षा की, ऐसे सुन्दर पवित्रतम स्थानों को तीर्थ एवं सिद्धपीठ के नाम से पुकारा गया, जिनमें भगवान नन्दनन्दन अशरणशरण, करुणावरुणालय, ब्रजेन्द्र नन्दन श्री कृष्णचन्द्र की पावन पुण्यमय क्रीड़ाभूमि श्रीधाम वृन्दावन में कालिन्दी गिरिनन्दिनी सकल कल्मषहारिणी श्री यमुना के सन्निकट राधाबाग स्थित अति प्राचीन सिद्धपीठ के रूप में श्री श्री माँ कात्यायनी देवी विराजमान हैं।

भगवान श्री कृष्ण की क्रीड़ाभूमि श्रीधाम वृन्दावन में भगवती देवी के केश गिरे थे, इसका प्रमाण प्रायः सभी शास्त्रों में मिलता ही है। आर्य शास्त्र, ब्रह्मवैवर्त पुराण एवं आद्या स्तोत्र आदि कई स्थानों पर उल्लेख है "ब्रजे कात्यायनी परा" अर्थात् वृन्दावन स्थित पीठ में ब्रह्मशक्ति महामाया श्री माता कात्यायनी के नाम से प्रसिद्ध है। वृन्दावन स्थित श्री कात्यायनी पीठ भारतवर्ष के उन अज्ञात 108 एवं ज्ञात 51 पीठों में से एक अत्यन्त प्राचीन सिद्धपीठ है। देवर्षि श्री वेदव्यास जी ने श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध के बाईसवें अध्याय में उल्लेख किया है-

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरू ते नमः ॥

हे कात्यायनि ! हे महामाये ! हे महायोगिनि ! हे अधीश्वरि ! हे देवि ! नन्द गोप के राजकुमार श्री कृष्णचन्द्र को हमारा पति बना दीजिए। हम सब श्रद्धा सहित आपको प्रणाम करती हैं।

(जिस कन्या के विवाह में विलम्ब हो रहा हो तो वह कन्या माँ के स्वरूप का ध्यान कर उक्त मंत्र का एक माला जाप प्रतिदिन करे तो उसको सुन्दर और मनोनुकूल वर की प्राप्ति होती है।)

दुर्गा सप्तशती में देवी के अवतरित होने का उल्लेख इस प्रकार मिलता है:

नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा।

मैं नन्द गोप के घर में यशोदा के गर्भ से अवतार लूंगी। श्रीमद्भागवत् में भगवती कात्यायनी के पूजन द्वारा भगवान श्रीकृष्ण को प्राप्त करने के साधन का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है। यह व्रत पूरे मार्गशीर्ष (अगहन) के मास में होता है। भगवान श्रीकृष्ण को पाने की लालसा में ब्रजांगनाओं ने अपने हृदय की लालसा पूर्ण करने हेतु यमुना नदी के किनारे से घिरे हुए राधाबाग नामक स्थान पर श्री कात्यायनी देवी का पूजन किया।

ऐसे महान सिद्धपीठ का उद्धार क्या कोई साधारण व्यक्ति कर सकता है? जब तक उसे भगवती की कृपा प्राप्त न हो जाए। भगवती द्वारा नियुक्त पुत्र श्री केशवानन्द जी ने श्री कात्यायनी पीठ का पुनरुद्धार करने हेतु इस पृथ्वी पर जन्म लिया।

कामरूप मठ के स्वामी रामानन्द तीर्थ जी महाराज से दीक्षित होकर कठोर साधना के लिए हिमालय की कन्दराओं में गमन किया। साधनान्तर सर्वशक्तिशालिनी माँ के आदेशानुसार वृन्दावन स्थित अज्ञात सिद्धपीठ का उन्होंने पुनरुद्धार कराया। स्वामी केशवानन्द जी महाराज द्वारा 1 फरवरी, 1923 माघी पूर्णिमा के दिन बनारस, बंगाल तथा भारत के विभन्न सुविख्यात प्रतिष्ठित वैदिक याज्ञिक ब्राह्मणों द्वारा वैष्णवीय परम्परा से मन्दिर की प्रतिष्ठा का कार्य पूर्ण कराया। माँ कात्यायनी के साथ-साथ पंचानन शिव, विष्णु, सूर्य तथा सिद्धिदाता श्री गणेश जी महाराज (जिनकी बात तो कुछ अलौकिक ही है "जिसने जाना उसने पाया" वाली कहावत चरितार्थ है) की मूर्तियों की भी इस मन्दिर में प्रतिष्ठा की गई।

राधा बाग मन्दिर के अन्तर्गत गुरु मन्दिर, शंकराचार्य मन्दिर, शिव मन्दिर, तथा सरस्वती मन्दिर भी दर्शनीय हैं। यहाँ की अलौकिकता का मुख्य कारण जहाँ साक्षात् माँ कात्यायनी सर्वशक्तिस्वरूपिणी दुःख-कष्टहारिणी, आन्नदमयी, करुणामयी अपनी अलौकिकता को लिए विराजमान हैं वहीं पर सिद्धिदाता श्री गणेश जी एवं बगीचे में अर्द्धनारीश्वर (गौरीशंकर महादेव) एक प्राण दो देह को धारण किए हुए विराजमान हैं। लोग उन्हें देखते ही मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं।

शंकराचार्य मन्दिर में जहाँ विप्र वटुओं द्वारा वेद ध्वनि से सम्पूर्ण वेद विद्यालय एवं सम्पूर्ण कात्यायनी पीठ का प्रांगण पवित्र हो जाता है, वहीं कात्यायनी पीठ में स्थित औषधालय द्वारा विभिन्न असाध्य रोगियों का सफलतम उपचार तथा मन्दिर में स्थित गौशाला में गायों की सेवा-पूजा दर्शनीय है। इसके अतिरिक्त यज्ञशाला में वेदोक्तरीति से स्वाहाकार मन्त्रों का श्रवण एवं विभिन्न उपासना पद्धति द्वारा अर्चन को देखकर कोई व्यक्ति स्तम्भित होकर माँ के समक्ष पहुँच जाता है और सम्पूर्ण संसार को ही वो पलभर के लिए भूल जाता है। यही माँ कात्यायनी की कृपा शक्ति का फल है, जो कई बार दर्शन के बाद भी उसकी लालसा और जाग्रत् होती चली जाती है।

हरिद्वार

श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज को हिमालय में 37 वर्षो की घोर तपस्या के पश्चात् माँ भगवती ने आदेश दिया, तत्पश्चात् वे हरिद्वार के समीप कनखल में बेल्वाला जहाँ एक और चण्डी पर्वत, नीलधारा तथा दूसरी ओर मनसा देवी व हरकी पौड़ी से बहती हुई भागीरथी गंगा व मनसा देवी के बीच, टापू पर ये तप करने आए।

उस समय वहाँ सर्पों और बिच्छुओं से भरा घोर जंगल था। उस समय श्री स्वामी जी के पास केवल एक कमंडल और चिमटा था। 1903 में अंग्रेजों का राज्य था। उस समय हरिद्वार के लाट साहब (राज्यपाल) डाक बंगले में ठहरा करते थे, वहाँ से वे स्वामी जी के दर्शन करने आते थे। श्री स्वामी जी तपस्या में लीन रहते थे। कभी-कभी वे श्री स्वामी जी से वार्तालाप करने रुक जाते थे। राज्यपाल श्री स्वामी जी के तेज और अंग्रेजी में वार्तालाप से बहुत प्रभावित हुए। एक दिन उन्होंने श्री स्वामी जी से कहा कि मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ, इस पर श्री स्वामी जी ने कहा कि कुछ ऐसी व्यवस्था कर दीजिए कि हमें यहाँ कुटिया में भजन व साधना करनें में कभी कोई परेशानी नहीं हो। तभी से यह भूमि उनके और अब उनके द्वारा बनाए गए ट्रस्ट के पास पट्टे पर है।

इस भूमि को प्राप्त करने के बाद श्री स्वामी जी ने स्वयं गंगा नदी में तैर कर और फिर नाव से एक-एक पत्थर एकत्रित कर गुफाएँ तथा चबूतरे का निर्माण किया। यह चबूतरा 30x40 फीट का है और लगभग 6 फीट ऊँचाई का है। इसी चबूतरे पर श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज ने अपने योग-गुरु श्रीयुत् श्यामाचरण लाहिड़ी जी महाराज की स्मृति का समाधि मन्दिर और श्री श्यामेश्वर महादेव का मन्दिर स्थापित किया। कुछ समय बाद यहाँ एक भव्य आश्रम भी बनवाया। अब यह आश्रम केशवाश्रम के नाम से प्रसिद्ध है। चबूतरे के नीचे पूजा एवं ध्यान करने हेतु गुफाएँ भी बनाई गई, जिनमें योगीजन तपस्या कर सकें।

श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज द्वारा हरिद्वार में स्थापित केशवाश्रम

आश्रम की भूमि में पंचवटी समान एक बगीचा है, जिसमें आँवला, अशोक, रुद्राक्ष, आम, जामुन और कई अन्य दिव्य वृक्ष हैं। ये वृक्ष वातावरण में दिव्य और सौम्य महक फैलाते हैं। चारों ओर गंगा की निर्मल धारा और पर्वतों के बीच यह आश्रम एक अत्यन्त रमणीय स्थान है। एक ओर पर्वत पर चण्डी देवी का मन्दिर तथा दूसरी ओर पर्वत पर मनसा देवी का मन्दिर, इस स्थान की दिव्यता को बढ़ाते हैं।

वर्तमान ट्रस्ट ने इस आश्रम के भवन व बगीचे को और भी अधिक रमणीय बनाया है। श्री श्यामेश्वर महादेव जी के मन्दिर के नीचे की गुफाओं को भी पुनः ठीक कराया गया है।

केशवाश्रम हरिद्वार में पूरे वर्ष भक्तगण दर्शन हेतु आते हैं और यहाँ के दिव्य वातावरण से ओत-प्रोत होकर जाते हैं। प्रतिदिन की पूजा-आरती के अलावा अन्य धार्मिक आयोजन भी होते हैं। इनमें से विशेष हैं - श्री श्यामेश्वर महादेव जी का रुद्राभिषेक, चण्डी-पाठ, पूज्य दण्डी स्वामियों एवं ब्राह्मणों की सेवा इत्यादि। गंगा-दशहरा और महाशिवरात्रि के पर्वो पर भी विशेष पूजाओं का आयोजन होता है।

श्री श्री कात्यायनी पीठ वृन्दावन में समयोचित पूजा महोत्सव आदि अनवरत रूप से विधिपूर्वक होते रहते हैं। भक्तों एवं दर्शनार्थियों की सुविधा हेतु प्रतिवर्ष की भांति नववर्ष व्रतोत्सव पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। माँ के चरणों में समर्पित करते हुए एवं सभी की मंगल कामना के साथ.....जय जय माँ कात्यायनी।

19 मार्च, 2026 (कात्यायनी ट्रस्ट)

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थनामुपक्रमे ।
यं नत्वा कृतकृतयाः स्युः तं नमामि गजाननम् ।।

श्री सिद्ध गणेश

श्री श्री कात्यायनी पीठ वृन्दावन में स्थित गणपति महाराज की मूर्ति का भी विचित्र इतिहास है। एक अंग्रेज श्री डब्ल्यू.आर. यूल कलकत्ता में मैसर्स एलटस ऐंशोरेन्स कम्पनी लि. जो नं.4 क्लाइव रोड पर है, में ईस्टर्न सेक्रेटरी के पर पर कार्य करते थे। इनकी पत्नी श्रीमती यूल ने कोई सन् 1911 या 1912 में जबकि वह विलायत जा रही थी।, जयपुर से एग गणपति महाराज की मूर्ति खरीदी। वह अपने पति को कलकत्ता छोड़कर इंगलैण्ड चली गईं तथा उन्होंने अपनी बैठक में कारनेस पर गणपति जी की प्रतिमा सजा दी। एक दिन श्रीमती यूल के घर भोज हुआ तथा उनके मित्रगणें ने गणेश जी की प्रतिमा को देखकर उनसे पूछा यह क्या है? श्रीमती यूल ने उत्तर दिया '''यह हिन्दुओं का सूंड़वाला देवता है उनके मित्रों ने गणेश जी की मूर्ति को बीच की मेज पर रखकर उपहास करना आरम्भ किया। किसी ने गणपति जी के मुख के पास चम्मच लगाकर पूछा इनका मुँह कहाँ है। जब भोज समाप्त हो गया तब रात्रि में श्रीमती यूल की पुत्री को ज्वर हो गया जो रात्रि को बड़े वेग से बढ़ गया। वह अपने तेज ज्वर में चिल्लाने लगी हाय मेरा सूंड़वाला खिलौना मुझे निगलने आ रहा है। डाक्टरों ने सोचा कि वह विस्मृति मे बोल रही है, किन्तु वह रात-दिन यही शब्द दोहराती रही एवं अत्यन्त भयभीत हो गई। श्रीमती यूल ने यह सब वृतान्त अपने पति को कलकत्ता लिखकर भेजा। उनकी पुत्री को किसी भी औषधि से लाभ नही हुआ। एक दिन श्रीमती यूल ने स्वप्न में देखा कि वह अपने बाग के अतिथिगृह में बैठी है। सूर्यास्त हो रहा है, अचानक एक नम्र पुरूष जिसके घुँघराले बाल, मशाल सी जलती आँख, हाथ में भाला लिए, वृषभ पर सवार बढ़ते हुए अन्धकार से उसकी ओर आ रहा है एवं कह रहा है, ''मेरे सूंड़ वाले देवता को तत्काल भारत भेज दो अन्यथा मैं तुम्हारे सारे परिवार का नाश कर दूँगा। वह अत्यधिक भयभीत होकर जाग उठी और दूसरे दिन प्रातः ही उन्होंने उस खिलौने को पार्सन बनवाकर पहली डाक से ही अपने

पति के पास भारत भेज दिया। जहाँ वह देवता गार्डन हेंडरसन के कार्यालय में तीन दिन तक रहे। वहाँ शीघ्र ही कलकत्ता के नर-नारियों की सिद्ध गणेश के दर्शनार्थ कार्यालय में भीड़ लग गई। कार्यालय का सारा कार्य रूक गया। श्री यूल ने अपने अधीन ऐंशोरेन्स एजेण्ट केदार बाबू से पूछा कि इस देवता का क्या करना चाहिए। अन्त में केदार बाबू गणेश जी को अपने घर 7, अभय चरण मित्र स्ट्रीट ले गए एवं वहाँ उनकी पूजा शुरू कर दी। तब से सब भक्तों ने केदार बाबू के घर पर जाना आरम्भ कर दिया।

इधर वृन्दावन में स्वामी केशवानन्द जी महाराज कात्यायनी देवी की पंचायतन पूजन विधि से प्रतिष्ठा के लिए सनातन धर्मा की पाँच प्रमुख मूर्तियों का प्रबन्ध कर रहे थे। श्री श्री कात्यायनी देवी की अष्टधातु से निर्मित मूर्ति कलकत्ता में तैयार हो रही थी तथा भैरव चन्द्रशेखर की मूर्ति जयपुर में बनाई गई थी, जबकि महाराज गणेश जी की प्रतिमा के विषय में विचार कर रहे थे, तभी उन्हें माँ का आदेश हुआ कि एक सिद्ध गणेश कलकत्ता में केदार बाबू के घर में हैं। जब तुम कलकत्ता से प्रतिमा लाओगे तब मेरे साथ मेरे पुत्र को भी लाना। अतः जब श्री स्वामी केशवानन्द जी श्री श्री कात्यायनी माँ की अष्टधातु की मूर्ति पसन्द करके लाने के लिए कलकत्ता गए तब केदार बाबू ने उनके पास आकर कहा गुरूदेव मैं आपके पास वृन्दावन आने का विचार कर रहा था।

मै बड़ी विपत्ति में हूँ। मेरे पास पिछले कुछ दिनों से एक गणेश जी की प्रतिमा है। प्रतिदिन रात्रि में स्वप्न में वह मुझसे कहते हैं कि जब श्री श्री कात्यायनी माँ की मूर्ति वृन्दावन जाएगी तो मुझे भी वहाँ भेज देना। कृपया आप स्वीकार करें। गुरूदेव ने कहा "बहुत अच्छा तुम वह मूर्ति स्अेशन पर ले आना, मैं तूफान से जाऊँगा। जब माँ जाएँगी तो उनका पुत्र भी उनके साथ जाएगा।"

अतः जब श्री श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज श्री श्री कात्यायनी देवी अष्टधातु की अत्यन्त ही सुन्दर प्रतिमा लेकर कलकत्ता से वापस आ रहे थे, केदार बाबू ने स्अेशन आकर गुरूदेव को गणेश जी की प्रतिमा दे दी। वह सिद्ध गणेश इन महान योगी द्वारा श्री श्री कात्यायनी पीठ में प्रतिष्ठित किए गए हैं। इनकी सीापना के कुछ काल बाद से ही इस अद्‌भुत देवता की कई आश्चर्यजनक घटनाएँ घटीं, जो कि यदि लिपिबद्ध की जाएँ तो एक पूरा ग्रन्थ ही बन जाए।

ऊँ गुरूवे नमः

श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज

श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज का जन्म बंगाल के शिवनीपुर में हुआ था। बनारस के कामरूप मठ के श्री स्वामी रामानन्द तीर्थ जी महाराज से दीक्षित हो, कठोर साधना के लिए हिमालय की कंदराओं में गमन किया। बहुत वर्ष हिमालय में तपस्या करने के पश्चात श्री दुर्गा मा के साक्षात दर्शन और आज्ञा द्वारा उन्होंने वृंदावन में श्री यमुना के निकट, राधाबाग में देवी भगवती के सिद्ध पीठ का पुनरूद्धार किया। श्री श्री कात्यायनी पीठ की स्थापना की। उन्होंने हरिद्वार में केशवाश्रम में अपने गुरूदेव श्री श्यामाचरण लाहिड़ी जी महाराज का समाधि मन्दिर बनाया। भुवनेश्वर व विंध्याचल में आश्रम स्थापित करे। बंगाल व अन्य शहरों में उनके बहुत से शिष्य व भक्त हुए।

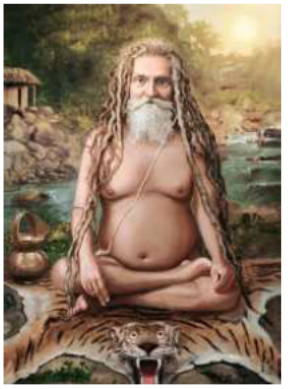

श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

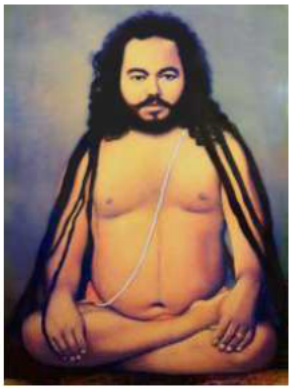

श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज के शिष्य श्री मन्मथानाथ जी व श्रीमति नेहर माँ के पुत्र निर्मल आगे चलकर श्री स्वामी सत्यानन्द जी कहलाये। श्री मन्मथानाथ जी व श्रीमति नेहर माँ ने अपने पुत्र को अपे श्री गुरूदेव के चरणों में समर्पित किया। उनकी वेद व शास्त्र शिक्षा श्री गुरूदेव ने बचपन से कराई और 5 वर्ष की उम्र में जनेऊ धारण करवाया।

श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने पूर्ण निष्ठा व भक्ति से श्री श्री कात्यायनी माँ की सेवा की। श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज जब शास्त्रों पर चर्चा करते थे तब सुनने वाले स्तब्ध हो जाते थे मानो माँ सरस्वती स्वयं बोल रहीं हों।

उनका विश्वास था कि यह सब उनके श्री गुरूदेव की कृपा का ही प्रसाद है। वे श्री केशवानन्द जी महाराज के परम प्रिय शिष्य थे। श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने 'श्री नारायण स्त्रोत' व 'श्री सरस्वती' की रचना करी। ये स्तोत्र आज भी मन्दिर में गाए जाते हैं श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज पूरे भारतवर्ष में भ्रमण कर सनातन धर्म का प्रचार प्रसार करते थे।

श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज

श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज अपने बाल्य काल से श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज की सन्निधि में वृन्दावन आश्रम में रहे। श्री गुरू महाराज जी ने इनको बहुत साधना की विधि और शास्त्र का ज्ञान दिया। इनकी श्री श्री कात्यायनी माँ के चरणों में श्रद्धा और भक्ति अतुल्य थी। उनकी विचारधारा, रहने और पूजा सेवा करने को देखकर यह प्रतीत होता था कि एक आदर्श महात्मा का जीवन कैसा होता है। उन्हें किसी सांसारिक वस्तु में आसक्ति नहीं थी और वे आजीवन श्री श्री कात्यायनी माँ की भक्ति पूर्वक सेवा करते रहे।

अपना सम्पूर्ण जीवन श्री गुरू कृपा से जो पाया था, उससे भक्तों का मार्गदर्शन करते रहे। श्री गुरू महाराज जी के सब शिष्य व आश्रम के सब भक्त इनको श्री महाराज जी के तुल्य ही देखते थे।

श्री रानी माँ

श्री गुरू महाराज जी के शिष्य श्री मन्मथानाथ जी अपनी बहन श्रीमति अपर्णा देवी जी (श्री रानी माँ) को वृन्दावन अपने गुरूदेव के पास लाये और बताया कि उनके पति व पुत्र का स्वर्गवास हो गया है और उनकी इच्छा है कि उनकी बहन को ऐसे आध्यात्मिक मार्ग में दीक्षित करें जिससे उनका

मन श्री भगवत चरणों में लगे।

श्री गुरू महाराज जी ने कृपा कर श्रीमति अपर्णा देवी जी को दीक्षित किया और श्री रानी माँ नाम दिया। श्री रानी माँ ने आजीवन श्री कात्यायनी माँ कि सेवा की और आश्रम के शिष्य व भक्तों को अपार स्नेह प्रदान किया।

श्री स्वामी विद्यानन्द जी महाराज

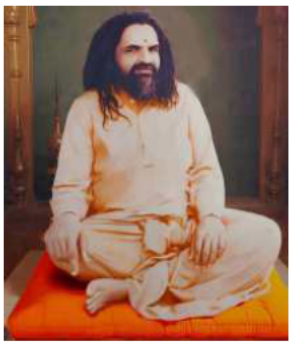

श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज के प्रधान शिष्य श्री स्वामी विद्यानन्द जी महाराज थे। वे आश्रम में श्री श्री कात्यायनी माँ की पूजा अर्चना और आश्रमों का संचालन करते थे।

श्री स्वामी विद्यानन्द जी महाराज का परिवार श्री स्वामी केशवानन्द जी महाराज का शिष्य था। बाल्य काल में शिक्षा दीक्षा से ओत-प्रोत होकर श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज द्वारा उनका यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया। इसके अनंतर उन्हें शिक्षा ग्रहण कराकर श्री श्री कात्यायनी माँ का पूर्ण अधिकार सौंप दिया गया।

वे दत्तचित हो श्री श्री कात्यायनी माँ की पूजा अर्चना करते थे। स्वभाव से अत्यंत सरल तथा कर्मशील थे। आपके सरल स्वभाव को देखकर सब मंत्र मुग्ध हो जाते थे।

कात्यायनी ट्रस्ट के ट्रस्टी

श्री विष्णु प्रकाश	प्रधान
श्रीमती रीता मेनन	उप प्रधान
श्री रवि दयाल	सचिव
श्री नरेश दयाल	कोषाध्यक्ष
श्री के.एल. बंसल	सह सचिव
श्री अशोक नारायण	ट्रस्टी
श्रीमती कुक्कू माथुर	ट्रस्टी
श्री ऋषि दयाल	ट्रस्टी
श्री दीपक सहाय	ट्रस्टी
श्री नरेन्द्र गोहिल	ट्रस्टी
श्री संजय बहादुर	ट्रस्टी
श्री अजय बहादुर माथुर	ट्रस्टी
श्री राजेश डी माथुर	ट्रस्टी
श्री अखिल जिंदल	ट्रस्टी
श्री इन्दू प्रकाश सहाय	ट्रस्टी
श्री अशोक दयाल	ट्रस्टी
डॉ. सिद्धार्थ सहाय	ट्रस्टी
श्रीमती प्रीति बालचंद्रन	ट्रस्टी

चैत्र–शुक्ल–पक्ष संवत् 2083

19 मार्च 2026 से 02 अप्रैल 2026 तक

		प्रतिपदा	क्षय
19.3.2026	गुरूवार	द्वितीया	चैत्र वासन्तिक नवरात्रि व्रत प्रारम्भ, श्री रौद्र नाम संवत्सर प्रारम्भ,घट स्थापना, श्री दुर्गा सप्तशती पाठ, श्री शतचण्डी महायज्ञ प्रारंभ, प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण
20.3.2026	शुक्रवार	द्वितीया	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण
21.3.2026	शनिवार	तृतीया	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण
22.3.2026	रविवार	चतुर्थी	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण।
23.3.2026	सोमवार	पंचमी	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण
24.3.2026	मंगलवार	षष्ठी	प्रातः पूजा आरती, पाठ परायण, श्री श्री कात्यायनी माँ का विशेष पूजन
25.3.2026	बुधवार	सप्तमी	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण
26.3.2026	गुरूवार	अष्टमी	प्रातः पूजा आरती पाठ पारायण, श्री दुर्गा अष्टमी

सन्धि-पूजा-विशेष आरती
दिनांक-26.03.2026 गुरूवार 2:06 P.M.

27.3.2026	शुक्रवार	नवमी	प्रातः पूजा आरती, हवन, श्री शतचण्डी महायज्ञ समापन, कुमारी पूजन, पूर्णाहुति, श्री राम नवमी, साधु ब्राह्मण सेवा

28.3.2026	शनिवार	दशमी	
29.3.2026	रविवार	एकादशी	कामदा एकादशी व्रत
30.3.2026	सोमवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत
31.3.2026	मंगलवार	त्रयोदशी	श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज का 68वाँ महातिरोधान महोत्सव, सर्वार्थ सिद्धि योग
01.4.2026	बुधवार	चतुर्दशी	
2.4.2026	गुरूवार	पूर्णिमा	श्री हनुमान जयंती, शीतल भोग व विशेष पूजा प्रारम्भ, सम्पूर्ण वैशाख मास में यह विशेष पूजा आज से प्रारम्भ होकर आगामी मास दिनांक 1.5.2026 तक (वैशाखी पूर्णिमा) पर्यंत होगी। यह वैशाख मास का सर्वोत्तम पर्व माना जाता हैं इस उत्सव में प्रतिदिन श्री श्री कायत्यायनी माँ, श्री श्री नारायण जी की विशेष पूजा, ऋतु फल भोग व श्री चन्द्रशेखर महादेव जी की जलधारा एवं संध्या में शीतल भोग का विशेष आयोजन होता है। वैशाख स्नान प्रारम्भ

वैशाख–कृष्ण–पक्ष संवत् 2083

03 अप्रैल 2026 से 17 अप्रैल 2026 तक

3.4.2026	शुक्रवार	प्रतिपदा	
4.4.2026	शनिवार	द्वितीया	सर्वार्थ सिद्धि योग
5.4.2026	रविवार	तृतीया	चतुर्थी व्रत चंद्रोदय 9.50 P.M.
6.4.2026	सोमवार	चतुर्थी	सर्वार्थ सिद्धि योग
7.4.2026	मंगलवार	पंचमी	
8.4.2026	बुधवार	षष्ठी	ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ
9.4.2026	गुरूवार	सप्तमी	
10.4.2026	शुक्रवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
11.4.2026	शनिवार	नवमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
12.4.2026	रविवार	दशमी	
13.4.2026	सोमवार	एकादशी	वरूथिनी एकादशी व्रत
14.4.2026	मंगलवार	द्वादशी	वरूथिनी एकादशी निम्बार्क
15.4.2026	बुधवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
16.4.2026	गुरूवार	चतुर्दशी	सर्वार्थ सिद्धि योग
17.4.2026	शुक्रवार	अमावस्या	देवपितृकार्ये अमावस्या, श्री शुकदेव मुनि जयन्ती

वैशाख–शुक्ल–पक्ष संवत् 2083

18 अप्रैल 2026 से 01 मई 2026 तक

18.4.2026	शनिवार	प्रतिपदा	
19.4.2026	रविवार	द्वितीया	
20.4.2026	सोमवार	तृतीया	अक्षय तृतीया, चंदन यात्रा, श्री बांके बिहारी जी चरण दर्शन
21.4.2026	मंगलवार	पंचमी	श्री आद्य शंकराचार्य जयंती
22.4.2026	बुधवार	षष्ठी	
23.4.2026	गुरूवार	सप्तमी	श्री गंगा सप्तमी (गंगोत्पति)
24.4.2026	शुक्रवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी, देवी बगुलामुखी जयंती
25.4.2026	शनिवार	नवमी	
26.4.2024	रविवार	दशमी	
27.4.2026	सोमवार	एकादशी	मोहिनी एकादशी व्रत सर्वेषाम्
28.4.2026	मंगलवार	द्वादशी	
29.4.2026	बुधवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
30.4.2026	गुरूवार	चतुर्दशी	श्री नृसिंह चतुर्दशी
01.5.2026	शुक्रवार	पूर्णिमा	वैसाख पूर्णिमा, श्री बुद्ध जयंती, श्री नृसिंह जयंती, वैशाख स्नान पूर्ण, शीतल भोग पूजा उत्सव समापन, श्री कूर्म जयंती, श्री राधारमण जयंती

प्रथम–ज्येष्ठ–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2083

02 मई 2026 से 16 मई 2026 तक

2.5.2026	शनिवार	प्रतिपदा	श्री माँ आनन्दमयी जयंती
3.5.2026	रविवार	द्वितीया	श्री नारद जयंती, वृन्दावन परिक्रमा
4.5.2026	सोमवार	तृतीया	सर्वार्थ सिद्धि योग
5.5.2026	मंगलवार	चतुर्थी	चतुर्थी व्रत चंद्रोदय 10.26 P.M.
6.5.2026	बुधवार	पंचमी	
7.5.2026	गुरूवार	पंचमी	
8.5.2026	शुक्रवार	षष्ठी	श्री गंगा सप्तमी (गंगोत्पति)
9.5.2026	शनिवार	सप्तमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
10.5.2026	रविवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
11.5.2026	सोमवार	नवमी	
12.5.2026	मंगलवार	दशमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
13.5.2026	बुधवार	एकादशी	अपरा एकादशी व्रत सर्वेषाम्
14.5.2026	गुरूवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत
15.5.2026	शुक्रवार	त्रयोदशी	
		चतुर्दशी	क्षय
16.5.2026	शनिवार	अमावस्या	देवपितृकार्ये अमावस्या, वट सावित्री पूजा

प्रथम (अधिक) ज्येष्ठ–शुक्ल–पक्ष संवत् 2083

17 मई 2026 से 31 मई 2026 तक

17.5.2026	रविवार	प्रतिपदा	अधिक मास ज्येष्ठ प्रारम्भ पुरूषोत्तम मास प्रारम्भ
18.5.2026	सोमवार	द्वितीया	सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग
19.5.2026	मंगलवार	तृतीया	
20.5.2026	बुधवार	चतुथी	
21.5.2026	गुरूवार	पंचमी	सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग
22.5.2026	शुक्रवार	षष्ठी	श्री स्कन्द षष्ठी
		सप्तमी	क्षय
23.5.2026	शनिवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
24.5.2026	रविवार	नवमी	
25.5.2026	सोमवार	नवमी	
26.5.2026	मंगलवार	दशमी	श्री गंगा दशहरा पर्व (अधिक मास)
27.5.2026	बुधवार	एकादशी	पुरूषोत्तम कमला एकादशी व्रत सर्वेषाम्
28.5.2026	गुरूवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत
29.5.2026	शुक्रवार	त्रयोदशी	
30.5.2026	शनिवार	चतुर्दशी	
31.5.2026	रविवार	पूर्णिमा	ज्येष्ठ पूर्णिमा

द्वितीय (अधिक) ज्येष्ठ–कृष्ण–पक्ष संवत् 2083

01 जून 2026 से 15 जून 2026 तक

1.6.2026	सोमवार	प्रतिपदा	द्वितीय (अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ
2.6.2026	मंगलवार	द्वितीया	
3.6.2026	बुधवार	तृतीया	
4.6.2026	गुरूवार	चतुर्थी	संकष्टी गणेश चतुर्थी चंद्रोदय 10.36 p.m.
5.6.2026	शुक्रवार	पंचमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
6.6.2026	शनिवार	षष्ठी	सर्वार्थ सिद्धि योग
7.6.2026	रविवार	सप्तमी	
8.6.2026	सोमवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
9.6.2026	मंगलवार	नवमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
10.6.2026	बुधवार	दशमी	
11.6.2026	गुरूवार	एकादशी	कमला पुरूषोत्तमा एकादशी व्रत स्मार्त वैष्णव
12.6.2026	शुक्रवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत
13.6.2026	शनिवार	त्रयोदशी	सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग
14.6.2026	रविवार	चतुर्दशी	रोहिणी व्रत
15.6.2026	सोमवार	अमावस्या	सोमवती अमावस्या, पुरूषोत्तम मास समाप्त

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष संवत् 2083

16 जून 2026 से 29 जून 2026 तक

		प्रतिपदा	क्षय
16.6.2026	मंगलवार	द्वितीया	
17.6.2026	बुधवार	तृतीया	रम्भा तीज व्रत
18.6.2026	गुरूवार	चतुर्थी	
19.6.2026	शुक्रवार	पंचमी	
20.6.2026	शनिवार	षष्ठी	अरण्य षष्ठी, श्री विंध्यवासिनी पूजा
21.6.2026	रविवार	सप्तमी	
22.6.2026	सोमवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी, अंबुबाची पूजा प्रारम्भ
23.6.2026	मंगलवार	नवमी	
24.6.2026	बुधवार	दशमी	श्री गंगा दशहरा, श्री गंगा स्नान (श्री केशवाश्रम, हरिद्वार) श्री बटुक भैरव जयंती
25.6.2026	गुरूवार	एकादशी	निर्जला एकादशी व्रत सर्वेषाम् अंबुबाची पूजा सम्पन्न
26.6.2026	शुक्रवार	द्वादशी	
27.6.2026	शनिवार	त्रयोदशी	शनि प्रदोष व्रत
28.6.2026	रविवार	चतुर्दशी	सर्वार्थ सिद्धि योग
29.6.2026	सोमवार	पूर्णिमा	पूर्णिमा व्रत

आषाढ़–कृष्ण–पक्ष संवत् 2083

30 जून 2026 से 14 जुलाई 2026 तक

30.6.2026	मंगलवार	प्रतिपदा	
1.7.2026	बुधवार	द्वितीया	
2.7.2026	गुरूवार	द्वितीया	
3.7.2026	शुक्रवार	तृतीया	चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 9.46 P.M)
4.7.2026	शनिवार	चतुर्थी	
5.7.2026	रविवार	पंचमी	
6.7.2026	सोमवार	षष्ठी	
7.7.2026	मंगलवार	सप्तमी	
8.7.2026	बुधवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
09.7.2026	गुरूवार	नवमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
10.7.2026	शुक्रवार	दशमी	योगिनी एकादशी व्रत स्मार्त
11.7.2026	शनिवार	एकादशी	योगिनी एकादशी वैष्णव
		द्वादशी	क्षय
12.7.2026	रविवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
13.7.2026	सोमवार	चतुर्दशी	सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग
14.7.2026	मंगलवार	अमावस्या	देवपितृकार्ये अमावस्या

आषाढ़–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2083

15 जुलाई 2026 से 29 जुलाई 2026 तक

15.7.2026	बुधवार	प्रतिपदा	गुप्त नवरात्रि विधान प्रारम्भ
16.7.2026	गुरूवार	द्वितीया	श्री जगन्नाथ जी रथ यात्रा (पुरी)
17.7.2026	शुक्रवार	तृतीया	
		चतुर्थी	क्षय
18.7.2026	शनिवार	पंचमी	
19.7.2026	रविवार	षष्ठी	
20.7.2026	सोमवार	सप्तमी	
21.7.2026	मंगलवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
22.7.2026	बुधवार	नवमी	
23.7.2026	गुरूवार	नवमी	गुप्त नवरात्रि व्रत समापन
24.7.2026	शुक्रवार	दशमी	
25.7.2026	शनिवार	एकादशी	देवशयनी एकादशी व्रत सर्वेषाम् चातुर्मास व्रत प्रारम्भ
26.7.2026	रविवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग
27.7.2026	सोमवार	त्रयोदशी	
28.7.2026	मंगलवार	चतुर्दशी	सन्यासी .चातुर्मास जल विधान प्रारम्भ
29.7.2026	बुधवार	पूर्णिमा	पूर्णिमा व्रत, श्री गुरू पूर्णिमा, श्री श्री कात्यायनी पीठ के श्री गुरू मन्दिर में विशेष पूजा, आरती, वेद पाठ, श्री गोवर्धन परिक्रमा, व्यास पीठ पूजा, सर्वार्थ सिद्धि योग

श्रावण–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2083

30 जुलाई 2026 से 12 अगस्त 2026 तक

30.7.2026	गुरूवार	प्रतिपदा	
31.7.2026	शुक्रवार	द्वितीया	
1.8.2026	शनिवार	तृतीया	
2.8.2026	रविवार	चतुर्थी	चतुर्थी व्रत(चन्द्रोदय 9.21 P.M)
3.8.2026	सोमवार	पंचमी	श्रावण सोमवार व्रत
4.8.2026	मंगलवार	षष्ठी	सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग
5.8.2026	बुधवार	सप्तमी	
6.8.2026	गुरूवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
7.8.2026	शुक्रवार	नवमी	
8.8.2026	शनिवार	दशमी	सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग
9.8.2026	रविवार	एकादशी	कामदा एकादशी व्रत सर्वेषाम्
10.8.2026	सोमवार	द्वादशी त्रयोदशी	प्रदोष व्रत, श्रावण सोमवार व्रत क्षय
11.8.2026	मंगलवार	चतुर्दशी	
12.8.2026	बुधवार	अमावस्या	देवपितृकार्ये अमावस्या, सर्वार्थ सिद्धि योग, हरियाली श्रावण अमावस्या, गुरू पुष्य योग

श्रावण–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2083

13 अगस्त 2026 से 28 अगस्त 2026 तक

13.8.2026	गुरूवार	प्रतिपदा	
14.8.2026	शुक्रवार	द्वितीया	
15.8.2026	शनिवार	तृतीया	हरियाली तीज, श्री बाँकेबिहारी जी मन्दिर में विशेष झूला महोत्सव
16.8.2026	रविवार	चतुर्थी	विनायक चतुर्थी व्रत
17.8.2026	सोमवार	पंचमी	श्रावण सोमवार व्रत, नाग पंचमी
18.8.2026	मंगलवार	षष्ठी	
19.8.2026	बुधवार	सप्तमी	श्री गोस्वामी तुलसीदास जयंती
20.8.2026	गुरूवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
21.8.2026	शुक्रवार	नवमी	पूज्यनीया श्री रानी माँ का 59 वाँ महातिरोधान उत्सव
22.8.2026	शनिवार	दशमी	
23.8.2026	रविवार	एकादशी	पवित्र एकादशी व्रत स्मार्त, श्री श्री कात्यायनी पीठ में झूला महोत्सव
24.8.2026	सोमवार	एकादशी	श्रावण सोमवार व्रत
25.8.2026	मंगलवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत
26.8.2026	बुधवार	त्रयोदशी	
27.8.2026	गुरूवार	चतुर्दशी	
28.8.2026	शुक्रवार	पूर्णिमा	पूर्णिमा व्रत, रक्षाबंधन, श्री श्री कात्यायनी पीठ में राखी धारणोत्सव, श्रवाणी कर्म, झूला महोत्सव समापन, सवार्थ सिद्धि योग

भाद्रपद–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2083

29 अगस्त 2026 से 11 सितम्बर 2026 तक

29.8.2026	शनिवार	प्रतिपदा	
30.8.2026	रविवार	द्वितीया	
31.8.2026	सोमवार	तृतीया	कज्जली तीज चंद्रोदय 8.05 P.M.
1.9.2026	मंगलवार	चतुर्थी	बहुला चतुर्थी
2.9.2026	बुधवार	पंचमी	
		षष्ठी	क्षय
3.9.2026	गुरूवार	सप्तमी	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त
4.9.2026	शुक्रवार	अष्टमी	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव, श्री दुर्गा अष्टमी
5.9.2026	शनिवार	नवमी	नन्दोत्सव, गोगा नवमी
6.9.2026	रविवार	दशमी	
7.9.2026	सोमवार	एकादशी	अजा एकादशी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग
8.9.2026	मंगलवार	द्वादशी	गोवत्स पूजा, प्रदोष व्रत
9.9.2026	बुधवार	त्रयोदशी	गुरू पुष्य योग, सर्वार्थ सिद्धि योग
10.9.2026	गुरूवार	चतुर्दशी	कुशोत्पाटनी अमावस्या, शरद ऋतु प्रारम्भ
11.9.2026	शुक्रवार	अमावस्या	देवपितृकार्ये अमावस्या

भाद्रपाद–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2083

12 सितम्बर 2026 से 26 सितम्बर 2026 तक

12.9.2026	शनिवार	प्रतिपदा	
13.9.2026	रविवार	द्वितीया	
14.9.2026	सोमवार	तृतीया	हरितालिका तीज व्रत, श्री वराह जयंती
15.9.2026	मंगलवार	चतुर्थी	श्री गणेश जयंती, श्री श्री कात्यायनी पीठ में श्री गणपति जी महाराज की विशेष पूजा
16.9.2026	बुधवार	पंचमी	सर्वार्थ सिद्धि योग, ऋषि पंचमी
17.9.2026	गुरूवार	षष्ठी	श्री सूर्य षष्ठी, श्री बलदेव छठ
18.9.2026	शुक्रवार	सप्तमी	
19.9.2026	शनिवार	अष्टमी	श्री राधा अष्टमी, श्री दुर्गा अष्टमी
20.9.2026	रविवार	नवमी	श्रीमद् भागवत जयंती
21.9.2026	सोमवार	दशमी	
22.9.2026	मंगलवार	एकादशी	पदमा एकादशी व्रत सर्वेषाम्
23.9.2026	बुधवार	द्वादशी	श्री वामन जयंती
24.9.2026	गुरूवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
25.9.2026	शुक्रवार	चतुर्दशी	अनंत चतुर्दशी व्रत
26.9.2026	शनिवार	पूर्णिमा	भाद्रपद पूर्णिमा, श्राद्ध पक्ष प्रारम्भ, पूर्णिमा श्राद्ध

आश्विन–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2083

27 सितम्बर 2026 से 10 अक्टूबर 2026 तक

27.9.2026	रविवार	प्रतिपदा	प्रतिपदा श्राद्ध
28.9.2026	सोमवार	द्वितीया	द्वितीया श्राद्ध
29.9.2026	मंगलवार	तृतीया	तृतीया श्राद्ध, चतुर्थी व्रत चंद्रोदय 7.43 P.M.
30.9.2026	बुधवार	चतुर्थी	चतुथ्री श्राद्ध
1.10.2026	गुरूवार	पंचमी	पंचमी श्राद्ध
2.10.2026	शुक्रवार	षष्ठी	षष्ठी श्राद्ध
3.10.2026	शनिवार	सप्तमी	सप्तमी श्राद्ध, अष्टमी श्राद्ध, श्री दुर्गा अष्टमी
		अष्टमी	क्षय
4.10.2026	रविवार	नवमी	मातृ नवमी, नवमी श्राद्ध
5.10.2026	सोमवार	दशमी	दशमी श्राद्ध
6.10.2026	मंगलवार	एकादशी	इंदिरा एकादशी व्रत, एकादशी श्राद्ध
7.10.2026	बुधवार	द्वादशी	द्वादशी श्राद्ध
8.10.2026	गुरूवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध
9.10.2026	शुक्रवार	चतुर्दशी	चतुर्दशी श्राद्ध
10.10.2026	शनिवार	अमावस्या	सर्वपितृ अमावस्या, श्राद्ध, स्नान, दान तर्पण, श्राद्ध पक्ष समापन

आश्विन–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2083

11 अक्टूबर 2025 से 26 अक्टूबर 2026 तक

11.10.2025	रविवार	प्रतिपदा	शारदीय नवरात्रि व्रत, देवी पूजा प्रारम्भ, घट स्थापना, प्रातः पूजा आरती, श्री शतचण्डी महायज्ञ प्रारम्भ, पाठ पारायण
12.10.2026	सोमवार	द्वितीया	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण
13.10.2026	मंगलवार	तृतीया	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण
14.10.2026	बुधवार	चतुर्थी	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण
15.10.2026	गुरूवार	पंचमी	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण
16.10.2026	शुक्रवार	षष्ठी	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण, श्री श्री 1008 योगीराज स्वामी केशवानन्द जी महाराज का 84 वाँ महातिरोधान महोत्सव, श्री गुरू मन्दिर में विशेष पूजा आरती, साधु ब्राह्मण सेवा
17.10.2026	शनिवार	सप्तमी	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण
18.10.2026	रविवार	सप्तमी	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण
19.10.2026	सोमवार	अष्टमी	प्रातः पूजा आरती, पाठ पारायण श्री दुर्गा अष्टमी विशेष पूजा, योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी जी महाराज का महातिरोधान महोत्सव

सन्धि-पूजा-विशेष आरती

दिनांक-19.10.2026 सोमवार समय 7:26 A.M.

20.10.2026	मंगलवार	नवमी	महानवमी पूजा, आरती, हवन, श्री शतचण्डी महायज्ञ समापन, कुमारी पूजन, पूर्णाहुति, साधु ब्राह्मण सेवा
21.10.2026	बुधवार	दशमी	श्री विजयादशमी, प्रातः 10 बजे श्री श्री कात्यायनी पीठ में श्री नारायण जी की सवारी का शमी वृक्ष-शमी मंडप में आगमन, विशेष पूजा, शमी वृक्ष एवं अस्त्र-शस्त्र पूजन, विजया सम्मेलन
22.10.2026	गुरूवार	एकादशी	पापंकुशा एकादशी व्रत
23.10.2026	शुक्रवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ
24.10.2026	शनिवार	त्रयोदशी	
25.10.2026	रविवार	चतुर्दशी	शरद पूर्णिमा, श्री श्री कात्यायनी पीठ में विशेष श्री लक्ष्मी पूजा, आकाश दीपक प्रारम्भ, चंद्र दर्शन, खीर भोग
26.10.2026	सोमवार	पूर्णिमा	अश्विन पूर्णिमा, कार्तिक स्नान प्रारम्भ

कार्तिक–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2083

27 अक्टूबर 2026 से 09 नवम्बर 2026 तक

27.10.2026	मंगलवार	प्रतिपदा द्वितीय	क्षय
28.10.2026	बुधवार	तृतीया	
29.10.2026	गुरूवार	चतुर्थी	करवा चतुर्थी व्रत चंद्रोदय 8:15 P.M.
30.10.2026	शुक्रवार	पंचमी	
31.10.2026	शनिवार	षष्ठी	
01.11.2026	रविवार	सप्तमी	अहोई अष्टमी व्रत चंद्रोदय 11:37 P.M.
02.11.2026	सोमवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
03.11.2026	मंगलवार	नवमी	
04.11.2026	बुधवार	दशमी	
05.11.2026	गुरूवार	एकादशी	रमा एकादशी व्रत सर्वेषाम्
06.11.2026	शुक्रवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, श्री धन्वंतरि जयंती
07.11.2026	शनिवार	त्रयोदशी	
08.11.2026	रविवार	चतुर्दशी	नरक चतर्दशी, श्री महालक्ष्मी पूजा दीपोत्सव, श्री गणेश-लक्ष्मी पूजा, दीपावली, श्री महाकाली पूजा
09.11.2026	सोमवार	अमावस्या	देवपितृकार्ये अमावस्या, सोमवती अमावस्या, अन्नकूट, श्री गोवर्धन पूजा, श्री श्री कात्यायनी पीठ में अन्नकूट दर्शन

कार्तिक–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2083

10 नवम्बर 2026 से 24 नवम्बर 2026 तक

10.11.2026	मंगलवार	प्रतिपदा	
11.11.2026	बुधवार	द्वितीया	भाई दूज, यम द्वितीया, विश्वकर्मा पूजा
12.11.2026	गुरूवार	तृतीया	
13.11.2026	शुक्रवार	चतुर्थी	
14.11.2026	शनिवार	पंचमी	
15.11.2026	रविवार	षष्ठी	सूर्य षष्ठी
16.11.2026	सोमवार	सप्तमी	
17.11.2026	मंगलवार	अष्टमी	गोपाष्टमी, गौ पूजन, श्री दुर्गा अष्टमी
18.11.2026	बुधवार	नवमी	श्री जगद्धात्री पूजा, आंवला नवमी, मथुरा-वृन्दावन परिक्रमा
19.11.2026	गुरूवार	नवमी	
20.11.2026	शुक्रवार	दशमी	देव प्रबोधिनी एकादशी स्मार्त
21.11.2026	शनिवार	एकादशी	देव प्रबोधिनी एकादशी वैष्णव, श्री तुलसी शालिग्राम जी विवाह
22.11.2026	रविवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
23.11.2026	सोमवार	चतुर्दशी	बैकुंठ चतुर्दशी
24.11.2026	मंगलवार	पूर्णिमा	कार्तिक स्नान समापन, श्री चैतन्य महाप्रभु वृन्दावन आगमन, आकाश दीप समापन, चातुर्मास व्रत पूर्ण

मार्गशीर्ष–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2083

25 नवम्बर 2026 से 8 दिसम्बर 2026 तक

25.11.2026	बुधवार	प्रतिपदा	"श्री कात्यायनी माँ व्रत पूजा" आज से प्रारम्भ होकर आगामी 23.12.26 तक पूर्णिमा को समाप्त होगी। व्रज गोपियों ने श्री धाम वृन्दावन में श्री श्री कात्यायनी माँ की एक माह तक पूजा अर्चना कर अपने आराध्य श्री कृष्ण जी को पति रूप में प्राप्त किया। इस व्रत के पालन करने से समस्त मनोकामनायें पूर्ण होती हैं
26.11.2026	गुरूवार	द्वितीया	
27.11.2026	शुक्रवार	तृतीया	चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 8.15 P.M सर्वार्थ सिद्धियोग
		चतुर्थी	क्षय
28.11.2026	शनिवार	पंचमी	
29.11.2026	रविवार	षष्ठी	सर्वार्थ सिद्धि योग
30.11.2026	सोमवार	सप्तमी	
1.12.2026	मंगलवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी, श्री काल भैरव अष्टमी
2.12.2026	बुधवार	नवमी	
3.12.2026	गुरूवार	दशमी	
4.12.2026	शुक्रवार	एकादशी	उतपत्ती एकादशी व्रत
5.12.2026	शनिवार	द्वादशी	
6.12.2026	रविवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
7.12.2026	सोमवार	चतुर्दशी	
8.12.2026	मंगलवार	अमावस्या	देवपितृकार्ये अमावस्या

मार्गशीर्ष–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2083

9 दिसम्बर 2026 से 23 दिसम्बर 2026 तक

9.12.2026	बुधवार	प्रतिपदा	
10.12.2026	गुरूवार	प्रतिपदा	
11.12.2026	शुक्रवार	द्वितीया	
12.12.2026	शनिवार	तृतीया	सर्वार्थ सिद्धि योग
13.12.2026	रविवार	चतुर्थी	श्री विनायक चतुर्थी व्रत
14.12.2026	सोमवार	पंचमी	श्री बाँकेबिहारी जी प्राकट्य उत्सव, बिहार पंचमी, श्री राम जानकी विवाह उत्सव
15.12.2026	मंगलवार	षष्ठी	
16.12.2026	बुधवार	सप्तमी	
17.12.2026	गुरूवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
18.12.2026	शुक्रवार	नवमी	
19.12.2026	शनिवार	दशमी	
20.12.2026	रविवार	एकादशी	मोक्षदा एकादशी व्रत सर्वेषाम्, श्री गीता जयंती
21.12.2026	सोमवार	द्वाद्वशी	प्रदोष व्रत
22.12.2026	मंगलवार	त्रयोदशी	
23.12.2026	बुधवार	चतुर्दशी	श्री श्री कातयायनी माँ का व्रत पूजा विधान समापन जो 25.11.26 से प्रारम्भ हुआ था, पूर्णिमा
		पूर्णिमा	क्षय

पौष–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2083

24 दिसम्बर 2026 से 7 जनवरी 2027 तक

24.12.2026	गुरूवार	प्रतिपदा	सर्वार्थ सिद्धि योग
25.12.2026	शुक्रवार	द्वितीया	योगीराज श्री श्री 1008 स्वामी केशवानन्द जी महाराज का आविर्भाव महोत्सव
26.12.2026	शनिवार	तृतीया	श्री स्वामी विद्यानन्द जी महाराज का आविर्भाव महोत्सव, चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 8.16 P.M
27.12.2026	रविवार	चतुथी	
28.12.2026	सोमवार	पंचमी	
29.12.2026	मंगलवार	षष्ठी	
30.12.2026	बुधवार	सप्तमी	सर्वार्थ सिद्धि योग
31.12.2026	गुरूवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
1.1.2027	शुक्रवार	नवमी	
2.1.2027	शनिवार	दशमी	
3.1.2027	रविवार	एकादशी	सफला एकादशी व्रत सर्वेषाम्
4.1.2027	सोमवार	द्वादशी	सर्वार्थ सिद्धि योग
5.1.2027	मंगलवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
6.1.2027	बुधवार	चतुर्दशी	
7.1.2027	गुरूवार	अमावस्या	देवपितृकार्ये अमावस्या, मौनी अमावस्या

पौष–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2083

8 जनवरी 2027 से 22 जनवरी 2027 तक

8.1.2027	शुक्रवार	प्रतिपदा	सर्वार्थ सिद्धि योग
9.1.2027	शनिवार	द्वितीया	
10.1.2027	रविवार	तृतीया	
11.1.2027	सोमवार	तृतीया	
12.1.2027	मंगलवार	चतुर्थी	
13.1.2027	बुधवार	पंचमी	
14.1.2027	गुरूवार	षष्ठी	मकर संक्रांति
15.1.2027	शुक्रवार	सप्तमी	
16.1.2027	शनिवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
17.1.2027	रविवार	नवमी	
18.1.2027	सोमवार	दशमी	पुत्रदा एकादशी व्रत स्मार्त
19.1.2027	मंगलवार	एकादशी	पुत्रदा एकादशी व्रत वैष्णव
		द्वादशी	क्षय
20.1.2027	बुधवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग
21.1.2027	गुरूवार	चतुर्दशी	
22.1.2027	शुक्रवार	पूर्णिमा	पूर्णिमा, माघ स्नान प्रारम्भ

माघ–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2083

23 जनवरी 2027 से 6 फरवरी 2027 तक

23.1.2027	शनिवार	प्रतिपदा	
24.1.2027	रविवार	द्वितीया	
25.1.2027	सोमवार	तृतीया	श्री संकष्टी चतुर्थी व्रत, सकट चौथ चन्द्रोदय 9.13 PM.
		चतुर्थी	क्षय
26.1.2027	मंगलवार	पंचमी	
27.1.2027	बुधवार	षष्ठी	सर्वार्थ सिद्धि योग
28.1.2027	गुरूवार	सप्तमी	
29.1.2027	शुक्रवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
30.1.2027	शनिवार	नवमी	
31.1.2027	रविवार	नवमी	
1.2.2027	सोमवार	दशमी	
2.2.2027	मंगलवार	एकादशी	षटतिला एकादशी व्रत सर्वेषाम्
3.2.2027	बुधवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत
4.2.2027	गुरूवार	त्रयोदशी	
5.2.2027	शुक्रवार	चतुर्दशी	सर्वार्थ सिद्धि योग
6.2.2027	शनिवार	अमावस्या	शनैशचरी अमावस्या, मौनी अमावस्या, देवपितृकार्ये अमावस्या

माघ–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2083

7 फरवरी 2027 से 20 फरवरी 2027 तक

7.2.2027	रविवार	प्रतिपदा	गुप्त नवरात्रि व्रत विधान प्रारम्भ
8.2.2027	सोमवार	द्वितीया	
9.2.2027	मंगलवार	तृतीया	
10.2.2027	बुधवार	चतुर्थी	तिल चतुर्थी
11.2.2027	गुरूवार	पंचमी	वसंत पंचमी, श्री श्री कात्यायनी पीठ में श्री सरस्वती माँ पूजन उत्सव
12.2.2027	शुक्रवार	षष्ठी	मन्दार षष्ठी
13.2.2027	शनिवार	सप्तमी	
14.2.2027	रविवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
15.2.2027	सोमवार	नवमी	गुप्त नवरात्रि व्रत समापन, सर्वार्थ सिद्धि योग
16.2.2027	मंगलवार	दशमी	
17.2.2027	बुधवार	एकादशी	जय एकादशी व्रत सर्वेषाम्
18.2.2027	गुरूवार	द्वादशी	भीष्म द्वादशी, प्रदोष व्रत
19.2.2027	शुक्रवार	त्रयोदशी	
20.2.2027	शनिवार	पूर्णिमा	माघी पूर्णिमा, श्री श्री कात्यायनी पीठ, वृन्दावन में 104 वाँ वार्षिक पीठ प्रतिष्ठा महोत्सव, श्री आद्य शंकराचार्य जी मन्दिर का 91 वाँ प्रतिष्ठा महोत्सव, विशेष पूजा, हवन, पाठ, माघ स्नान पूर्ण

फाल्गुन–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2083

21 फरवरी 2027 से 8 मार्च 2027 तक

21.2.2027	रविवार	प्रतिपदा	
22.2.2027	सोमवार	द्वितीया	
23.2.2027	मंगलवार	तृतीया	
24.2.2027	बुधवार	चतुर्थी	चतुर्थी व्रत चंद्रोदय 9:57 P.M.
25.2.2027	गुरूवार	पंचमी	
26.2.2027	शुक्रवार	षष्ठी	
27.2.2027	शनिवार	सप्तमी	
28.2.2027	रविवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
1.3.2027	सोमवार	नवमी	
2.3.2027	मंगलवार	दशमी	
3.3.2027	बुधवार	एकादशी	
4.3.2027	गुरूवार	एकादशी	विजया एकादशी व्रत सर्वेषाम्
5.3.2027	शुक्रवार	द्वादशी	प्रदोष व्रत
6.3.2027	शनिवार	त्रयोदशी	श्री महाशिवरात्रि व्रत, श्री चन्द्रशेखर महादेवजी (मातृ मन्दिर), श्री केशवेश्वर महादेवजी, श्री सत्येश्वर महादेवजी, श्री रत्नेश्वर महादेवजी (श्री गुरू मन्दिर), श्री शंकरेश्वर महादेवजी (श्री शंकराचार्य मन्दिर), श्री गौरीशंकर महादेवजी (बगीची), श्री ईशानेश्वर महादेवजी (सरस्वती मन्दिर), श्री नर्मदेश्वर महादेवजी (छोटे शिव मन्दिर) श्री श्यामेश्वर महादेवजी (केशवाश्रम, हरिद्वार) की विशेष पूजा, रूद्राभिषेक, चतुष प्रहर विशेष पूजा, चारों प्रहरों की विशेष आरती, रात्रि जागरण
7.3.2027	रविवार	चर्तुदशी	शिव खप्पर पूजा
8.3.2027	सोमवार	अमावस्या	देवपितृकार्ये अमावस्या

फाल्गुन–शुक्ल–पक्ष–संवत् 2083

9 मार्च 2027 से 22 मार्च 2027 तक

9.3.2027	मंगलवार	प्रतिपदा	श्री श्री 108 स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का 76 वाँ महातिरोधान उत्सव, गीता पाठ, ब्राह्मण भोजन
10.3.2027	बुधवार	द्वितीया	फुलेरा दौज
11.3.2027	गुरूवार	तृतीया	
12.3.2027	शुक्रवार	चतुर्थी	सर्वार्थ सिद्धि योग
13.3.2027	शनिवार	पंचमी	लट्ठमार होली बरसाना
14.3.2027	रविवार	षष्ठी	
15.3.2027	सोमवार	सप्तमी	
16.3.2027	मंगलवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी, होलाष्टक प्रारम्भ
17.3.2027	बुधवार	नवमी	
		दशमी	क्षय
18.3.2027	गुरूवार	एकादशी	आमलकी एकादशी व्रत
19.3.2027	शुक्रवार	द्वादशी	
20.3.2027	शनिवार	त्रयोदशी	शनि प्रदोष व्रत
21.3.2027	रविवार	चतुर्दशी	पूर्णिमा, श्री श्री कात्यायनी पीठ में होलिकोत्सव पूजन, होलिका दहन
22.3.2027	सोमवार	पूर्णिमा	धुलहड़ी, होली मिलन उत्सव, श्री चैतन्य महाप्रभु आविर्भाव महोत्सव

चैत्र–कृष्ण–पक्ष–संवत् 2083

23 मार्च 2027 से 06 अप्रैल 2027 तक

23.3.2027	मंगलवार	प्रतिपदा	
24.3.2027	बुधवार	द्वितीया	
25.3.2027	गुरूवार	तृतीया	चतुथ्री व्रत चंद्रोदय 9:41 P.M.
26.3.2027	शुक्रवार	चतुर्थी	सर्वार्थ सिद्धि योग
27.3.2027	शनिवार	पंचमी	श्री रंग पंचमी
28.3.2027	रविवार	षष्ठी	
29.3.2027	सोमवार	सप्तमी	शीतला सप्तमी, बासोड़ा
30.3.2027	मंगलवार	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
31.3.2027	बुधवार	नवमी	
1.4.2027	गुरूवार	दशमी	
2.4.2027	शुक्रवार	एकादशी	पापमोचिनी एकादशी व्रत, श्री स्वामी विद्यानन्द जी महाराज का महातिरोधान उत्सव, गीता पाठ, ब्राह्मण भोजन
3.4.2027	शनिवार	द्वादशी	
4.4.2027	रविवार	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
5.4.2027	सोमवार	चतुर्दशी	
6.4.2027	मंगलवार	अमावस्या	देवपितृकार्ये अमावस्या, सर्वार्थ सिद्धि योग

श्रीरस्तु

श्री सरस्वत्यष्टकम्

या सदा संस्तुता शश्वत् पुरुहूत मुखै सुरैः
शुद्ध स्फटिक संकाशा सा मां पातु सरस्वती ।। 1 ।।
वल्लकी व्यग्र हस्ता या सदा पुस्तकधारिणी
अक्ष सूत्र धरादेवी सा मां पातु सरस्वती ।। 2 ।।
आत्मभूतनया देवी भूतानुग्रहकारिणी
हंसासना हास्या युता सा मां पातु सरस्वती ।। 3 ।।
योगिनां हृदये नित्यं योगरूपेण राजते
साक्षात् योग स्वरूपा या सा मां पातु सरस्वती ।। 4 ।।
नोनतुय्यमाना नितरां नारदादि महर्षिभिः
ज्ञान विज्ञान रूपा या सा मां पातु सरस्वती ।। 5 ।।
प्रफुल्ल वदनाम्भोजा भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी
भक्तानामनुरक्तानां सा मां पातु सरस्वती ।। 6 ।।
जाड्यापहा महामाया महामोह प्रणाशिनी
श्वेताम्बरधरा नित्या सा मां पातु सरस्वती ।। 7 ।।
भूषणाऽऽभूषिताडगी या वराऽभीति लसत् करा।
ईशकृष्णनताड्ध्यूब्जा सा मा पातु सरस्वती ।। 8 ।।
सारस्वतमिदं स्तोत्रं सत्यानन्देन निर्मितम्
स्मारं स्मारं गिरं देवी वर्णिता तत् प्रसत्तये ।। 9 ।।
वृन्दारण्ये विराजन्तीम् त्वामम्ब प्रार्थये मुहुः
अन्नत्यानां नृणां बुद्धिं शुद्धां कुरु हरिप्रियाम् ।। 10 ।।
इति श्री स्वामी सत्यानन्द ब्रह्मचारि रचितं
श्री सरस्वत्यष्टकम् सम्पूर्णम्।।

श्रीनारायणाष्टकम्

शुद्धान्तः करणो भूत्वा ह्यर्कमण्डल संस्थितम्
सर्वरोगहरं देवं ध्यायेन्नारायणं विभुम् ।।१।।
अनादि-निधनं देवं सर्वतंत्रप्रकाशकम्।
विश्वपालनकर्तारं ध्यायेन्नारायणं विभुम् ।।२।।
वेद-वेदान्त-कर्तारं सुरेशादि-समर्चितम्।
भक्तेष्वत्यनुरक्तं तं ध्यायेन्नारायणं विभुम् ।।३।।
येन पूर्णमिदं सर्वं जगत् स्थावर-जङ्गमम्।
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं ध्यायेन्नारायणं विभुम् ।।४।।
निष्प्रपंञ्चं गुणातीतं मनोवाचामगोचरम।
सदानन्दमयं देवं ध्यायेन्नारायणं विभुम्।।५।।
ओंकारगम्यरूपं तं निर्विकारं विनिष्क्रयम्।
अनन्तं विमलंदेवं ध्यायेन्नाराणं विभुम्।।६।।
यद्भासा भासते सर्वं भूतानां हृदि संस्थितम्
स्वप्रकाश-स्वारूपं तं ध्यायेन्नारायणं विभुम्।।७।।
ज्ञानातीतमगम्यं तं विवेकेन विभावितम्।
योगिभिर्ज्ञानगम्यं तं ध्यायेन्नारायणं विभुम। ।।८।।
नारायणाष्टकं ह्येतत् सत्यानन्देन निर्मितम्।
वीतस्पृहानुरक्तयर्थं ब्रह्म-प्रीति-करं शुभम् ।।९।।

इति श्री स्वामी सत्यानन्द ब्रह्मचारि रचितम् नारायणाष्टकम् सम्पूर्णम्।।

श्री शिवाष्टकम्

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहिमाम्
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर त्राहिमाम्
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षमाम्

(जय श्री चन्द्रशेखर महाराज की जय)

प्रभुमीशमनीशमशेषगुणं
गुणहीनमहीश-गलाभरणम्।
रण-निर्जित-दुर्ज्जयदैत्यपुरं
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। १।।
गिरिराजसुतान्वित-वामतनुं
तनु-निन्दित-राजित-कोटि विधुम्।
विधि-विष्णु-शिवस्तुत-पादयुगं
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। २ ।।
शशिलाञ्छित-रञ्जत-सन्मुकुटं
कटिलम्बित-सुन्दर-कृत्तिपटम्।
सुरशैवलिनी-कृत-पूतजटं
प्रणमामिशिवं शिवल्पतरुम् ।। ३ ।।
नयनत्रय-भूषित-चारुमुखं
मुखपद्म-पराजित-कोटिविधुम्।
विधु-खण्ड-विमण्डित-भालतटं
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। ४ ।।

वृषराज-निकेतनमादिगुरुं
गरलाशनमाजि विषाणधरम्।
प्रमथाधिप-सेवक-रञ्जनकं
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। ५ ।।
मकरध्वज-मत्तमतंगहरं
करिचर्म्मगनाग-विवोधकरम्।
वरदाभय-शूलविषाण-धरं
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। ६ ।।
जगदुद्व-पालन-नाशकरं
कृपयैव पुनस्त्रय रूपधरम्।
प्रिय मानव-साधुजनैकगतिम्
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। ७ ।।
न दत्तन्तु पुष्पं सदा पाप चित्तैः
पुनर्जन्म दुःखात् परित्राहि शम्भो।
भजतोऽखिलदुःखसमूहहरं
प्रणमामिशिवं शिवकल्पतरुम् ।। ८ ।।

(शम्भो महादेव हर हर)

।। ऊँ नमः पार्वतीपरमेश्वरौ हर हर महादेव ।।

श्रीगोपालस्तोत्रम!

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे गजमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्।।
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावलिः
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः।।
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दु वदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवात्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गो–गोपसंघावृतं
गोविन्दं कलवेणु–वादन–परं दिव्यांगभूषं भजे।।
व्याधस्याचरणं ध्रुवस्य च वयो विद्या गजेन्द्रस्य का
का जातिर्विदुरस्य यादवपतेरुग्रस्य किं पौरुषम्।
कुब्जायाः कमनीयरूपमधिकं किं तत्सुदाम्नो धनं
भक्त्या तुष्यति केवलं न च गुणै। भक्तिप्रियोमाधवः।।

भवान्यष्टकस्तोत्रम

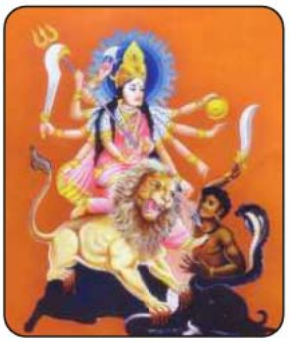

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममास्ते
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 1 ।।
भवाब्धावपारे महादुःखभीरूः
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 2 ।।
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमंत्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यास योगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 3 ।।
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वाऽपि मातर्
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 4 ।।
कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः
कुदृष्टिः कुवाक्य–प्रबन्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 5 ।।
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।

न जानामि चान्यं सदाहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 6 ।।
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रु–मध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा माँ प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 7 ।।
अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तैर्प्रविष्ट प्रणष्टः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।। 8 ।।

।। इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री शंकराचार्य्यकृतं श्री भवान्यष्टकं सम्पूर्णम्।।

(बोलो श्री कात्यायनी माई की जय)
(बोलो श्री गुरु महाराज की जय)

गुरू स्तुति

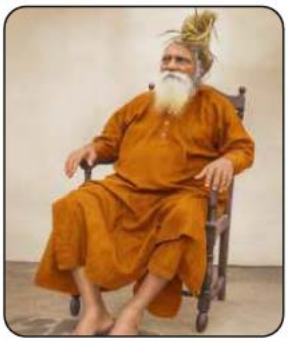

जय केशव प्यारे स्वामी जय केशव प्यारे।
भवसागर से तारो पूरन औतारे।
सत–चित–आनन्द तुम हो अचल अटल भारे।
अजर अमर निर्गुण हो कष्ट हरन हारे।।
नित्य–मुक्त निर–बन्धन असंग अविकारे।
अलख निरंजन शिव हो व्यापक भय हारे।।
अखण्ड घट घट वासी कहत वेद चारे।
जग में तुम, तुम में जग फिर जग से न्यारे।।
नित्य तृप्त कृतकृत्य हो राग द्वेष जारे।
शरणागत पतितन को ब्रह्म लोक डारे।।
अधिष्ठान हो सबके तुम अपरम्पारे।
सुख स्वरूप प्रकाश पापी खल तारे।।
स्वतन्त्र हो अविनाशी जन्म मरन टारे।
भक्त–मुक्ति के कारण बहुत रूप धारे।।

भक्त–मुक्ति जो चाहत ध्यान धरे सारे।
दृढ़ विश्वास कियो जिन सर्वक्लेश जारे।।
जिज्ञासु भक्तन के काम–क्रोध मारे।
लोभ–मोह–मद–मत्सर–छल–बल सब गारे।।
आवागवन भयानक है भुजंग कारे।
नाव भँवर में घूमें करो खेवा पारे।।
कालीचरन पुकारत जग में केशव गुण गा रे।
चरण–धूरि शिर धारो प्रेमीजन सारे।।
महा निशा में आरती निश्चय कर गा रे।
परमानन्द निरन्तर केशव पद पारे।।

श्री अम्बाजी की आरती

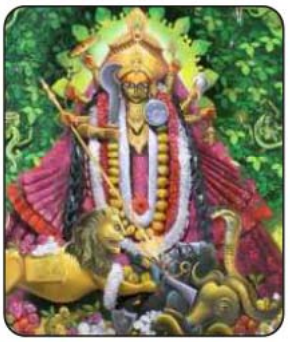

ऊँ जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि बह्मा शिव री ।। ऊँ जय अम्बे.
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगगद को।
उज्जवल से दोउ नैना, चद्रवदन नीको।। ऊँ जय अम्बे.
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त–पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ।। ऊँ जय अम्बे.
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर–नर–मुनि–जन सेवत, तिनके दु:खहारी ।। ऊँ जय अम्बे.
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।। ऊँ जय अम्बे.
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर–घाती।
धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।। ऊँ जय अम्बे.
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरें।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करें।। ऊँ जय अम्बे.
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमलारानी।
आगम–निगम–बखानी, तुम शिव पटरानी।। ऊँ जय अम्बे.

चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरो।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ।। ऊँ जय अम्बे.
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दु:ख हरता सुख सम्पति करता।। ऊँ जय अम्बे.
भुजा चार अति शोभित, वर–अभयं धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर–नारी।। ऊँ जय अम्बे.
(श्री) अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत गुरुंदेव स्वामी सुख सम्पति पावे।। ऊँ जय अम्बे.

भगवान जगदीश्वर जी की आरती

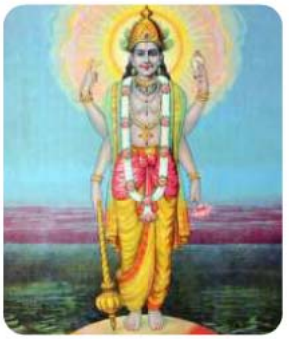

ऊँ जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे।।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करें। ।। ऊँ।।
जो ध्यावे फल पावै, दुख विनशै मन का।। प्रभु.।।
सुख–सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तन का।। ऊँ।।
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।। प्रभु.।।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।। ऊँ।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।।प्रभू.।।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ऊँ।।
तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता।। प्रभु.।।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता।। ऊँ।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती।। ऊँ।।
किस विधि मिलूँ दयामय! तुमको मैं कुमती।। ऊँ।।
दीनबन्धु दुःखहर्ता तुम रक्षक मेरे।। प्रभू.।।
करूणा हस्त उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ऊँ ।।
विषय–विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।। प्रभु.।।
श्रद्धा–भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ।। ऊँ।।

विशेष जानकारी

वेदों और पुराणों में वर्णन है कि-

1. यदि कोई भाग्यवान भक्त नवीन मन्दिर का निर्माण करवाकर प्राचीन मन्दिरों का संस्कार या जीर्णोद्धार सेवा करता है, उसे अनन्त कोटि फल प्राप्त होते हैं।
2. मन्दिर में उत्सव तिथि विशेष में जो फूल, ध्वजा, पताका, चन्द्रताप, भोग, राग, सुगन्ध, द्रव्य, कपूर, चन्दन आदि प्रदान करता है, उसकी विपत्तियाँ तथा अनिष्ट दूर हो जाते हैं तथा जीवन सुखमय बनता है।
3. जो भक्त मंदिर में आरती के दर्शन करता है, धूप, घी, दीप आदि की व्यवस्था करता है या अखण्ड दीपदान में अपना सहयोग करता है, उसे कीर्ति तथा यश की प्राप्ति होती है और धनवान बनता है।
4. जो भक्त मन्दिरों में देव विग्रहों के समक्ष भोग लगवाकर ब्राह्मण, साधु एवं भक्तों को प्रसाद वितरण करता है, उसके जन्म–जन्मांतर के पापों एवं कष्टों का निवारण हो जाता है।
5. यदि कोई भक्त पीठ स्थान, तीर्थ, मन्दिर में गौग्रास की व्यवस्था करता है, चारा डलवाता है या पक्षियों को चूगा डलवाता है, उसके घर से सभी अमंगल दूर हो जाते हैं।
6. यदि कोई भाग्यवान भक्त विद्यालय अथवा औषधालय की सेवा करता है, उसको सुबुद्धि और भगवत्कृपा की प्राप्ति होती है।

7. विवाह के उपरान्त नवदम्पति को देवी मन्दिरों में दर्शन करवाने एवं पूजा करवाने से उनका जीवन मधुमय तथा आनन्दमय हो उठता है।
8. मन्दिरों में मर्यादा, शिष्टाचार, अनुशासन का पूर्ण पालन होना परमावश्यक है। देवता के समक्ष पैर फैलाकर बैठना, थूकना, असद्वार्ता करना, धूम्रपान करना, अशुद्ध दृष्टि रखना, घर गृहस्थी की बातें एवं अवान्तर प्रसंग करना महा अपराध है। इनसे बचना चाहिए।
9. अपना नाम प्रचार के उद्देश्य से या स्वार्थ पूर्ति हेतु, अहंकारपूर्ण सेवा निष्फल है। ''सेवक धर्म कठिन मैं जाना'' जिनके भाग्य में होता है वही सेवा कर सकता है।

चौघड़िया

शुभ कार्य और यात्रा के लिए कोई मुहूर्त न बनने पर
उत्तम चौघड़िया देखकर कार्य एवं यात्रा करनी चाहिए।

दिन का चौघड़िया							समय	रात का चौघड़िया						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	दिन रात	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६ से ७ ।।	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७ से १ ।।	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	१ से १० ।।	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१० से १२ ।।	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२ से १ ।।	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१ से ३ ।।	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	३ से ४ ।।	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	४ से ६।।	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

उत्तम चौघड़िया- अमृत, शुभ, लाभ तथा चर ये उत्तम चौघड़िया हैं। शुभ कार्य और यात्रा के लिए कोई मुहूर्त न बनने पर उत्तम चौघड़िया देखकर कार्य करना चाहिए।

निम्न चौघड़िया- उद्वेग, रोग, काल ये निम्न चौघड़िया हैं। इन चौघड़ियों का शुभ कार्य में त्याग करना चाहिए।

रवि पुष्य योग के समय तंत्र-मंत्र की सिद्धि एवं जड़ी-बूटी ग्रहण करना उत्तम हैं। गुरु पुष्य योग में व्यापारिक कार्य एवं धन लाभ का कार्य करना विशेष रूप से सिद्धिप्रद होता है।

गच्छ गौतम शीघ्रं त्वं ग्रामेषु नगरेषु च।
आसनं भोजनं यानं सर्वं में परिकल्पय।। गौतमाय नमः

उपर्युक्त श्लोक का स्मरण करने से यात्रा सुखद एवं सफल होती है।

दिशाशूल ज्ञानार्थ चक्रम्

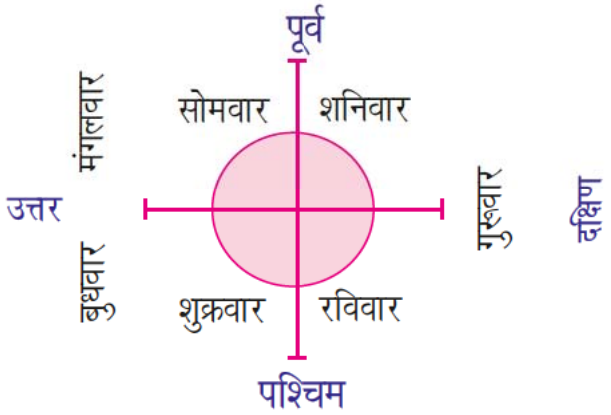

सोम शनिचर पूरब ना चालू । मंगल बुध उत्तरदिसिकालू ।।
रवि शुक्र जो पश्चिम जाय। हानि होय पथ सुख नहिं पाय।।
बीफे दक्खिन करे पयाना, फिर नहीं समझो ताको आना।।

अर्थ- सोमवार एवं शनिवार को पूरब दिशा में तथा मंगल एवं बुधवार को उत्तर दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिए। रविवार एवं शुक्रवार को पश्चिम दिशा में यात्रा करना सर्वदा हानिकारक है। गुरूवार के दिन तो दक्षिण दिशा में यात्रा करना अशुभ है। ये दिशाशूल कहलाते हैं।

नोट- दिशाशूल में यदि यात्रा करना आवश्यक ही हो तो निम्नांकित वस्तु खाने से यात्रा शुभ होती है।

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
वस्तु	घी	दूध	गुड़	पुष्प	दही	घी	तिल

श्रुतिस्मृति ममैवाज्ञे यस्त उल्लंघ्य वर्तते।
आज्ञोच्छेदी ममद्वेषी मद्भक्तोऽपि न वैष्णवः।।

पुराण में भगवद् वचन वेद और स्मृतियाँ (शास्त्र) मेरी ही आज्ञा हैं। जो व्यक्ति उनका उल्लंघन करके मनमाना आचरण करता है वह मेरा अपराधी तथा द्रोही है। ऐसा व्यक्ति मेरा भक्त होकर भी वास्तव में वैष्णव नहीं है।

आश्रम में आयोजित उत्सवों की झांकियाँ

आश्रम में आयोजित उत्सवों की झांकियाँ

तंत्र चूड़ामणि से संग्रहित 51 शक्तिपीठ

क्र.	स्थान	अंग तथा अंगभूषण	भैरव	शक्ति
1.	हिंगलाज (पाकिस्तान)	ब्रह्मरन्ध्र	भीमलोचन	कोट्टारी
2.	शर्करार (महाराष्ट्र)	त्रिनेत्र	क्रोधीश	महिषमर्दनी
3.	सुगन्धा (बांग्ला देश)	नासिका	त्रियंबक	सुनंदा
4.	कश्मीरा (जम्मू और कश्मीर)	कंठदेश	त्रिसंध्येश्वर	महामाया
5.	ज्वालामुखी (हिमाचल प्रदेश)	जोह्व	उन्मत्त/वटुकेश्वर	सिद्धिदा/अंबिका
6.	जालंधरा (पंजाब)	वाम स्तन	भीषण	त्रिपुरमालिनी/त्रिपुरनाशिनी
7.	वैद्यनाथ (बिहार)	हृदय	वैद्यनाथ	जयादुर्गा
8.	नेपाला (नेपाल)	जानुद्वय	कपालि	महामाया
9.	मनसा (तिब्बत)	दक्षिण हस्त	अमर/हर	दक्षिणी
10.	उत्कला/बिरजा (ओडिशा)	नाभि	जगन्नाथ	विमला/विजया
11.	गंडकी (नेपाल)	दक्षिण गंडा	चक्रपाणि	गंडकी चंडी
12.	बहुला (पश्चिम बंगाल)	वाम बाहु	भीरूका/तीव्रक	बाहुला
13.	उज्जिनी (मध्य प्रदेश)	कुरपारा	कपिलंबरा	मंगला चंडी
14.	चट्टाला (बांग्ला देश)	दक्षिण बाहु	चंद्रशेखर	भवानी
15.	त्रिपुरा (त्रिपुरा)	दक्षिण पद	त्रिपुरेश	त्रिपुरा
16.	त्रिस्त्रोत (पश्चिम बंगाल)	वाम पद	अंबरा/ऐश्वरा	ब्रह्माणी
17.	कामगिरी/कामरूप देश (असम)	महा मुद्रा/योनि	उमानंद	कामाख्या/दशमहाविद्या
18.	युगाद्य/क्षीर ग्राम (पश्चिम बंगाल)	दक्षिण पद अंगुष्ठा	क्षीरकंटक	भूतधात्री
19.	काली पीठ (पश्चिम बंगाल)	दक्षिण पद अंगुली	नकुशीला	काली
20.	प्रयाग (उत्तर प्रदेश)	हस्त अंगुली	भाव	ललिता
21.	जयंती (बांग्ला देश)	वाम जंघा	क्रमादीश्वर	जयंती
22.	किरीट (पश्चिम बंगाल)	किरीट	समवर्त्त/सिद्ध	रूप विमला/भुवनेश्वरी
23.	मणिकर्णिका/वाराणासी (उ.प्र.)	कर्णकुंडल	काल भैरव	विशालाक्षी
24.	कन्याश्रम (बांग्ला देश)	पृष्ठ	निमिषा	सर्वाणी
25.	कुरूक्षेत्र (हरियाणा)	दक्षिण गुल्फा	स्थानु	सावित्री
26.	मणिवेदिका (राजस्थान)	मणिबन्ध	सर्वानंद	गायत्री
27.	श्रीशैला/श्री हट्टा (आन्ध्र प्रदेश)	ग्रीवा	संवरानंद	महालक्ष्मी
28.	कांचि (तमिलनाडु)	कंकाल	रूरू	देवगर्भा/वेदगर्भा
29.	काल माधव (असम)	वाम नितंब	अष्टांग	काली
30.	सोना (मध्य प्रदेश)	दक्षिण नितंब	भद्रसेना	नर्मदा
31.	रामगिरी/राजगिरी (उत्तर प्रदेश)	दक्षिण स्तन	चंदा	शिवानी
32.	वृन्दावन (उत्तर प्रदेश)	केश	भूतेशा/कृष्णनाथ	उमा/कात्यायनी
33.	शुचि/अनल (तमिलनाडु)	उर्ध्वा दंत पंक्ति	समाहार/समक्रूर	नारायणी
34.	पंच सागर (महाराष्ट्र)	अंधो दंत पक्ति	महारूद्र	वराही
35.	कारा टोया टाटा (बांग्ला देश)	वाम तलपा	वामन	अपर्णा
36.	श्री पर्वत (आन्ध्र प्रदेश)	दक्षिण तलपा	सुंदरानंद	सुंदरी
37.	विभासा (पश्चिम बंगाल)	वाम गल्फा	सर्वनंद	कपाली/भीमरूपा
38.	प्रभास (गुजरात)	उदर	वक्रतुंड	चंद्रभागा
39.	भैरव पर्वत (मध्य प्रदेश)	ऊर्ध्वोष्ठ	लंबकर्ण	अवंति
40.	जन स्थान (महाराष्ट्र)	चिबुका	विकृताक्ष	भ्रामरी
41.	गोदावरी तीर्थ (आन्ध्र प्रदेश)	वाम गंडा	दंडपाणि/वस्तनाथ	विश्वमात्रिका/राकिनी
42.	रत्नावलि (पं. बंगाल)	दक्षिण स्कंध	शिवा	कुमारी
43.	मिथिला (नेपाल)	वाम स्कंध	महोदर	उमादेवी/महादेवी
44.	नालाहट्ट (पश्चिम बंगाल)	नाल	योगीश्वर	काली
45.	कर्नाटा (कर्नाटक)	कर्ण अभिरू	जया	दुर्गा
46.	वक्रेश्वरा (पश्चिम बंगाल)	मनस	वक्रनाथ	महिषामर्दनी
47.	यशोरा (बांग्ला देश)	वाम हस्त	चंदा	यशोरेश्वरी
48.	अट्टहास (पश्चिम बंगाल)	अधरोष्ठ	विश्वेश्वर	फुल्लारा
49.	नन्दीपुरा (पश्चिम बंगाल)	कंठहार	नंदीकेश्वर	नंदिनी
50.	लंका (श्रीलंका)	नुपूर	रक्षेश्वर	इंद्राक्षी
51.	विराट (राजस्थान)	वामपद अंगुलि	अमृत	अंबिका

।। ॐ श्री गुरूवे नमः ।।

स्वामी रामानन्द तीर्थ

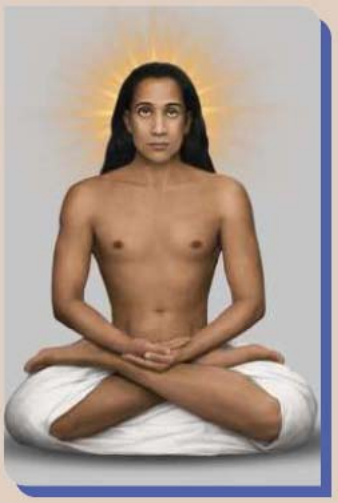

बाबा जी महाराज

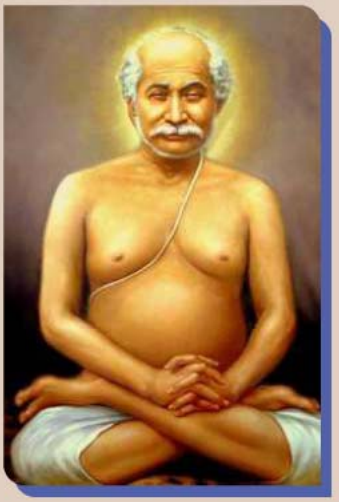

योगीराज श्यामाचरण लाहिड़ी

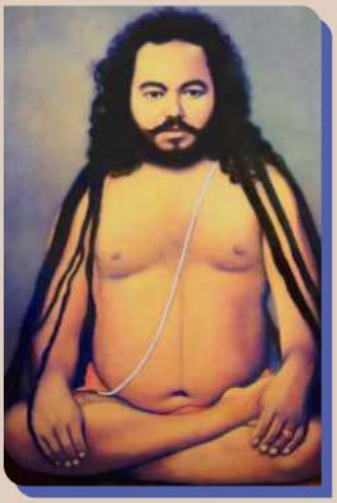

स्वामी सत्यानन्द जी

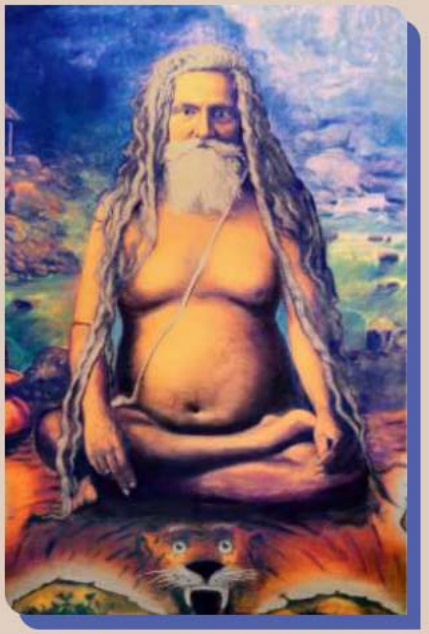

श्री श्री 1008 स्वामी केशवानन्द जी महाराज
संस्थापक श्री श्री कात्यायनी पीठ
केशवाश्रम वृन्दावन एवं केशवाश्रम हरिद्वार

स्वामी नित्यानन्द जी

श्री रानी माँ

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः ।
गुरूर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।

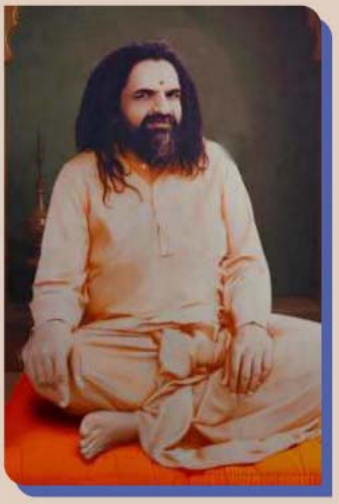

स्वामी विद्यानन्द जी

श्री श्री कात्यायनी पीठ, वृन्दावन
केशवाश्रम–राधाबाग, वृन्दावन–281121 मथुरा
Mob. : 8920984445 | Website : www.katyayanipeeth.org.in | E-mail: katyayanipeethvrindavan@gmail.com